भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

विश्वास/अंधविश्वास

यात्रा-प्रसंग :

१. ससक साँप सन्यासी तेली, विधवा नारि मिले अकेली।
तीन कोस पर विप्र जो काना, ब्रह्म एक धरी बचे न प्राना।।
लिए हाड़ स्वान जो धावे, कहे डाक जे मरन जनावे। (डाक कवि)

२. उत्तर देखे सुनर नारी, एहि मृत्यु कहे पुकारी।
बाएँ फड़पति, दाहिने सियार, दहि ले दहि ले कहे गोवार।
ओकरा आगा फेटे मलाह, देख मीन के परम उछाह।
कि हुई राजा, कि हुई दिवान, कहे डाक जो परम सुजान।

३. रवि मंगल जो परे सेवाती, जो बालक जनमें आधी राती।
आसपास के चउपट करे, नोह काटत में नउआ मरे।
रास गिनत में पंडित मरे, ना तऽ आठवाँ महीना नगर सोहाय।

४. अतरल कतरल छपटल केस, राह चलत में लागे ठेस,
कोई पूछे जइबऽ कहवाँ, बनल काम बिगड़ल तहवाँ।

५. सोम शनीचर पूरब न चालू, मंगर बूध उत्तर दिशकालू।
रवि शुक्र जो पश्चिम जाय, हानि होय, पथ लाभ न पाय।
बिअफे दखिन करे पयाना, ताको समझो लौट न आना।

६. छेड़, भेड़, गेख्आ, तेली, बिधवा नारि मिले अकेली।
गाँव के बहरा मिले कान, बड़े भाग से बचे प्रान।।

७. जोबन से भरपूर सुन्दरी, कामनी रस सिंगार,
सनमुख से आवे तो कारज बिगड़े सार।

८. नीलकेंठ के दरसन दहिने, जतरा काल परसंग।
कहीं भी तू जा यात्री, पावोगे अन्न धन।।

९. सबसे सगुन इहे अच्छ, सनमुख गाय पिआवे बाछा।

१०. चलते समय वस्त्र जो अटँक कर फट जाय।
घर में रह जा यात्री, नाहीं तो दुख पाय।

११. तीन जने जब संगे भयउ, हाथ डोलावत घरे अययू।

१२. तीन विप्र कहवाँ, विपत परे तहवाँ।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

१३. मुस्किल मुस्किल मुस्किल तीन।
पहिला मुस्किल डगर के गाँव, दूसर मुस्किल बढ़ गए नाम
तीसर मुस्किल धन से हीन, मुस्किल मुस्किल मुस्किल तीन।

दैनिक जीवन-व्यवहार में :

१. बौड़ेरा उठने पर भूत की कल्पना।

२. नजर न लगे, इसके लिए बच्चे के माथे पर काला टीका करना; सब्जी के खेत में मिट्टी के वर्तन (हांड़ी) को काले तथा सफेद रंग से रंग कर रखना।

३. मछली मारने के पहले पोखरे की पूजा, जिसमें जीव (सुअर के बच्चे) की बलि दी जाती है।

४. दीपावली की भोर में दरिद्र खेदना, हँसुए से सूप पीटकर।

५. वर्षा के लिए गँवमाल पूजा।

६. ग्रहण लगने पर नदी-स्नान, दान-पुण्य।

७. लू से बचाव के लिए पॉकेट में प्याज लेकर चलना, घर के दरवाजे पर प्याज टाँगना।

८. नदी के ऊपर नाव या पुल से पार करते समय नदी को प्रणाम करना तथा पैसा फेंकना।

९. नवीन चूल्हे की पूजा

१०. खेत में बीज बोने के समय अथवा खेती का पहला फसल काटने के समय खेत में खेतही पूजा, मिट्टी के बर्तन में खीर पकाकर कषि देवता को चढ़ाना।

११. विवाह के समय लड़के/लड़की के हाथ में छूरी या कोई लौह अस्त्र देकर मटकोर के दिन बाहर निकालना। फिर विवाह के दिन स्नान कराने के बाद दाहिने पैर से, उलटकर रखे गये मिट्टी के ढ़कने को जिसके नीचे सरसो आदि रखा होता है, फोड़ना। परिछावन के दिन वर के माथे को लोढ़ा से पूजना, नौसे के ऊपर गीले आटे का लड्डू अच्छत छींटना।

१२. संध्या समय अथवा घर के किसी पुरुष के भोजन करते समय किसी बाहरी व्यक्ति को जलावन की आग न देना।

१३. पुत्र-प्रप्ति के निमित्त हुड़के के नचनिये को अपने आंचल पर नचवाना निम्न जाति की स्त्रियों में प्रचलित।

१४. नदी में बुड़वा होने की बात।

१५. रात में कौवे का बोलना, घर पर चिल्होर का बैठना, रात में कुत्ते का रोना, यात्रा के समय हाथ से शीशा गिरकर फूटना, स्यार का रास्ता काटना, आदि अशुभ माना जाता है।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

१६. नया घर बनाते समय सूप-कूंची अथवा कौवा मारकर टांगना।

१७. पूआ-पूरी बनाते समय पास में एक लोटा जल रखना और चूल्हे के चारों ओर एक रेखा खींचना और जल छिड़कना।

१८. दीपक का आग न देना।

१९. गोहत्या लगने पर भीक्षा मांगकर त करना।

२०. शव को फुंकने के स्थान तक जाने वाला मंजिलिया कहलाता है। रास्ते में 'राम नाम सत्य है' बोला जाता है। डोम के हाथ से प्राप्त आग से ही चिता जलाना, श्मशान भूमि पर तुलसी पौधा लगाना।

२१. यात्रा पर जाने के समय दूध, चोखा न खाना।

२२. कान पर जनेउ चढ़ाकर शौच या पेशाब करना।

२३. भोजन में तीन रोटी न देना।

२४. बच्चे की सुरक्षा के लिए - ढोढ़ी में काजर लगाना, लहसुन हींग के तबीज को काले धागे में पहनाना, मल्लाह के जाल के लोहा का बना छल्ला बच्चे को पहनाना, विचित्र नाम रखना, मनौती करना, सवा वर्ष, ढाई वर्ष या पाँच वर्ष पर किसी देवता के सामने उसका मुंडन कराना, तुलादान करना, झाड़-फूंक आदि।

२५. दक्षिण दिशा में बैठकर भोजन न करना। उत्तर सिरहार करके न सोना।

२६. औरत का अपने पति का नाम न लेना।

२७. संध्या समय दीपक जलाकर उसे प्रणाम करना।

२८. शनिवार, मंगलवार और गुरुवार को नख-बाल न कटवाना। एक लड़के वाला पिता सोमवार को हजामत नहीं बनवाता है।

२९. नयी रिश्तेदारी कायम करने हेतु आने वाले मेहमान को दूध न देना, भूजा या रुखा भोजन न कराना।

३०. दूज का चाँद देखते समय हाथ में कुछ द्रव्य रखना।

३१. दुकान में किसी की नजर न लगे, इसके लिए सात मीर्च, एक नीबू धागे में गूँथ कर दुकान के सामने टाँगना (मंगल या रविवार के दिन)।

३२. कनफुकवे गुरु का चरण धोकर उसका जल पीना।

३३. बिना यज्ञोपवीत हुए छूरे से दाढ़ी न बनवाना, नोहरनी से नोह न काटना।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

अन्त्येष्ठी क्रिया सम्बन्धी :

१. किसी की मृत्यु होने पर श्राद्ध तक घर में सब्जी न छौंकना, पुआ-पकवान आदि न बानाना। किसी शुभ दिन को घर में किसी की मृत्यु होने पर सदा के लिए उस दिन को शुभ कर्म के लिए वर्जित करना। उत्तर सिरहान करके शव को रखना।

चिता में आग लगाने वाले/मुखाग्नि देने वाले को सभी बराती अपने अपने हाथ से पंचलकड़ी देते हैं। मुखाग्नि देने वाला दक्षिण दिशा में खड़ा होकर इन सभी लकड़ियों को पीछे शव पर फेंकता है। फूंकने वाले का पहले मुंडन होता है, वह गो-दान करता है, घैला के जल से स्नान करता है, मारकीन वस्त्र पहनता है। पचाठी की रस्सी नहीं काटी जाती। दूधा के दिन फुला बुझाया जाता है। शव पूंजने के बाद सभी स्नान करके चलते हैं, किन्तु मुड़कर पीछे कोई नहीं देखता। फूला बुझाने की क्रिया में श्मशान (चीता स्थल पर) ९६ लिखकर, वहाँ मस्तक की हड्डी का डुकड़ा रखकर उसपर दूध गिराया जाता है। कुछ लोग मस्तक की हड्डी पतुकी में रखकर उसे गंगा (नदी) में छोड़ते हैं। शव फूंककर आने के बाद लोहा, आग, पत्थर, हल्दी, दूब, जल, काँस का बर्तन (धातु) स्पर्श करते हैं, दाँत से पाँच बार मीर्चा काटते हैं। फूला बुझाने के दिन पीपल के पेड़ पर मूंज की रस्सी के सहारे भांडा (छोटा कलश) टांगते हैं, वहाँ ब्राह्मण, हजाम मौजूद रहते हैं। कूस, दिया बत्ती, कसैली, पैसा रखकर मंत्र द्वारा घंट टांगा जाता है। उत्तरी पहनकर हाथ में कंडा में लगा लोहा लेकर कूस की पैंती पहनकर, पांच व्यक्ति घंट घुरिया कर (दाहिने से) पीपल वृक्ष पर घंटा में पानी गिराते हैं, जो पीपल के पेड़ पर पड़े चार अंगुल के मारकीन में तील, अच्छत रखते हैं और प्रतिदिन उसी में से घंट में डालते हैं।

ब्राह्मणों में १२ दिन पर, क्षत्रियों में १३ दिन पर, वैश्यों और शुद्रों में १६ दिन पर कजिया/श्राद्ध/कर्म होता है। दसकातर (दस दिन पर) पिण्डदान होता है, उस दिन पूरा परिवार (पुरुष वर्ग) मुंडन कराता है। एकादस के दिन पिण्ड कराकर महापात्र को खिलाया जाता है, दान होता है, कोई कोई संढ़वाय भी कराता है, १२वें, १३वें या १६वें दिन भोज दिया जाता है।

२. चेचक (निकसारी) निकलने पर पीत वर्ण का वस्त्र नहीं पहनना, किसी को कुछ न देना, सब्जी छौंककर न बनाना, मछली-मांस न खाना, किसी की विदाई न करना। पानी छनाकर गुड़, चावल, काली जी को चढ़ाकर लड़कों में बांटना और मैया का गीत गाना।

३. गंगा स्नान से सारा पाप धुल जाने का विश्वास।

४. बोआई के दिन किसी को कुछ न देना, भूजा न भूजना।

५. भूत भगाने के लिए पचारा गीत गाना।

६. रविवार को हल नहीं चलाया जाता।

७. कुँआर लड़का/लड़की को तावे की पहली रोटी और चूल्हे पर से ही भोजन निकाल कर न देना।

८. शनिश्चर ग्रह से बचने के लिए, हाथ में लोहे की अंगूठी पहनना।

९. ताम्बा पहनकर झूठ न बोलना।

१०. बीमारी से बचाव के लिए गले में ताबीज डालना।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

११. हजाम के द्वार पर हजामत न बनवाना (इसलिए कि बनवाने वाले का ऐश्वर्य चला जाता है।)

रोग एवं इलाज :

१. भुइली लगने पर रोगी के शरीर में सिन्दुर एवं कड़वा तेल मिलाकर पोंतना और कम्बल ओढ़ाकर सुलाना।

२. कटने पर इमिरती का पत्ता छापना, गेंदा फूल का रस गिराना अथवा चूना पोतना।

३. कुत्ता के काटने पर प्याज पीसकर कटे स्थान पर लगाना और सात कुँआ दिखाना।

४. सर्दी होने पर घोड़सार की हवा सूंघाना।

५. चोट, मोच लगने पर हल्दी-चूना गर्म कर छापना।

६. कौड़ी छुआने (बाघी/गिल्टी निकलने) पर रेंड के पत्ता में रेंडी तेल लगाकर उसे आग पर सेंककर फूले हुए स्थान पर चिपकाना।

७. बलतोड़ होने पर तीसी पीसकर छापना। (इससे फोड़ा शीघ्र पक कर फूट जाता है)

८. हड्डी बिरनी के डंक मारने पर मिट्टी का तेल लगाना।

९. गाय-भैंस के ब्याने पर मसूर का दाल उसीनकर/उबालकर पिलाना।

१०. ज्वर में तुलसी-पत्ता, मरिच, कतरा के सोर, गुमा के पत्ता और नमक का काढ़ा बनाकर पिलाना।

११. कपरबथी में मलयगिरी चंदन रगड़कर छापना, नौसादर, चूना मिलाकर सुरकना।

१२. दाँत दर्द में मदार का दूध रूई में लेकर रखना। बहुआर का छाल गरम कर, नमक डालकर कुल्ला करना। नमक, हींग, लहसुन, कड़वा तेल गर्मकर, बांस के दातुन से मंजन करना।

१३. कान-दर्द में कड़वातेल एवं लहसुन गर्म कर डालना अथवा गेंदा फूल के पत्ता का रस, पीपल के पत्ते के रस में मिलाकर डालना।

१४. पेट दर्द में हींग, प्याज का रस एवं हुक्के का पानी पिलाना।

१५. हड्डी बिरनी के काटने पर लोहा से रगड़कर, नाद के पानी से धोना।

१६. बासी पानी जो पिये, हरे भून के खाय। कहे महादेव पार्वती से, ता घर बैद्य न जाय।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

अमावश्या, ज्योति पर्व के दिन :

पहले सात दीपक - धरती, ब्रह्म, गंगाजी, अन्नपूर्णा, नयनमाता (कुआँ), सूर्य एवं महादेव के नाम जलाया जाता है। चतुर्दशी के दिन जम्हुआ (यम) का दीया जलाया जाता है। दीपक ले जाने वाला पीछे मुड़कर नहीं देखता। अमावश्या के दिन नया बर्तन, वस्त्र उपयोग में लाया जाता है।

दीपक - खाद रखने वाले गड्ढे पर आंगन में दीपक के नीचे ढकने में कोई अन्न रखा जाता है। फिर शुद्ध जल गिराया जाता है।

गोधन (गोवर्धन) पूजा के दिन :

गाय, बैल या बाछी के गोबर से गोधन की आकृति बनाई जाती है। उसमें गोधन, गोधिनी, घर, जाँत-ढेंकी, ओखल, मूसल, नाद, घोठा, आदि की आकृति बनायी जाती है। परिवा (अमावश्या के दूसरे दिन) बैल से वह आकृति खनवायी जाती है, बैल बछड़े को नहलाकर नया पगहा लगाया जाता है। उस दिन पशु से कोई काम नहीं लिया जाता।

परिवा के दूसरे दिन गोधन की पूजा होती है, उसी दिन कुँवारी कन्यायें पीड़िया लगाती हैं और एक माह तक गीत मंगल गायन के बाद उसे नदी में बहा देती हैं। पूर्णिमा के दिन चकवा-चकई दहवाया जाता है, तुलसी-पौध के पास १५ दिन तक (अमावश्या से पूर्णिमा तक) दीपक जलाया जाता है।

जच्चा-बच्चा के सम्बन्ध में :

अलवात - शिशु के जन्म से एक माह तक स्त्री अलवात कहलाती है।

लरकोरी - छह महीने तक अलवात स्त्री लरकोरी कहलाती है।

सउरी - जिस कोठरी में शिशु जन्म लेता है, वह कुछ दिन तक सउरी कोठरी कही जाती है।

जाबड़ - शिशु जन्म के समय माता के शरीर में लगी गंदगी, रक्त-पानी आदि।

पुरइन - बच्चा जन्म लेते समय शरीर से निकला खून, लेदा-पानी।

खेड़ी जुड़ाना - लड़का होने पर १२ दिन पर और लड़की होने पर ६ दिन पर खेड़ी जुड़ाया जाता है। इस विधान में कटहल के पत्ता पर रोटी, रसियाव रखा जाता है और एक छोटी गुड़ही बनाकर उसमें थोड़ा दूध रखा जाता है, बच्चे के पीने के लिए प्रतीकात्मक रूप में। दूध थोड़ा ही रखा जाता है, यह मानकर कि अधिक दूध बच्चे को पचेगा नहीं। सास या देवरानी लड़के को तेल मालिस करती है। इस अवसर पर औरतें गीत भी गाती हैं।

छठियार - जन्म से ९ दिन बाद बच्चे का और ६ दिन बाद बच्ची का छठियार होता है। बच्चे के लिए कटहल के ९ पत्तों पर ९ रोटियाँ और बच्ची के लिए ६ पत्तों पर ६ रोटियाँ रखी जाती हैं। शिशु को काजल लगाया जाता है। बुआ, बहिन, नेग माँगती हैं। बच्चे को काजल लगाकर, उसे साफ कपड़े में लपेट कर दीप के समक्ष औंधे मुँह सुलाया जाता है और बच्चे के स्वास्थ्य एवं दीर्घायु के लिए कामना की जाती है। दीपक आटे का बनाया जाता है और उसमें सरसो का तेल या घी डाला जाता है।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

छठियार आकृति - लरकोरी की कोठरी के दीवाल पर गोबर पिण्ड से छठियार की आकृति बनायी जाती है। सामान्यतः छोटे चौकोर आकृति के बीच में गोबर के अनेक पिण्ड क्रम से दीवाल पर चिपका दिये जाते हैं और उसे सिन्दुर से टिक दिया जाता है।

पसनी - लरकोरी औरत की कोठरी के दरवाजे पर अलाव जलाया जाता है ताकि अशुद्ध हवा कोठरी में प्रावेश न करे। लरकोरी औरत घर के अन्दर आते वक्त उस अलाव में अपना पैर सेंकती है। इसी अलाव को पसनी कहा जाता है।

प्रथम स्नान - लरकोरी औरत को पहला स्नान कराते समय उसके मुख में अजवाइन डाल दिया जाता है; कोठरी के बाहर निकलते समय उसके हाथ में कोई लौह पदार्थ छूरी, खुरपी, हँसिया, जो भी मिल जाय, रहता है; स्नान कराने से पहले उसके शरीर पर सरसों का बुकवा लगाया जाता है, फिर साबुन से स्नान कराया जाता है। स्वच्छ वस्त्र पहनाकर उसे चटाई या पुआल पर बैठाया जाता है और उसके नख काटे जाते हैं। इस सफाई उपक्रम के बाद उसे हलवा खाने को दिया जाता है।

ओछवानी - बच्चा जनने के बाद स्त्री शरीर से कमजोर होती है। शरीर से काफी रक्त निकला रहता है। अतः उसका स्वास्थ्य ठीक करने के लिए अनेक प्रकार की आयुर्वेदीय जड़ी-बूटियों तथा मेवों का मिश्रण, जिसे ओछवानी कहते हैं, नित्य पीसकर कुछ दिनों तक उस स्त्री को दिया जाता है। उसके साथ दूध, घी, हल्दी एवं हींग का विशेष प्रबन्ध रहता है।

उत्सव - शिशु के जन्म के समय बच्चे की फुआ, बहिन या चाची थाली बजाती हैं (पुत्र होने पर); बच्चा निर्भय रहे, इसके लिए उसकी माँ की अँजुरी में कोई अन्न- धान, गेहूँ आदि रखकर चमइन उसे लोकाती (उछलती) है। अँजुरी लोकाने का यह विधान जच्च-बच्चा के प्रथम स्नान के दिन किया जाता है।

नार काटना - प्रसव के बाद बच्चे का नाल जो माता से जुड़ा रहता है उसको काटना, नार काटना कहा जाता है, इ से साफ ब्लेड से काटा और साफ कपड़े या धागे से बाँधा जाता है। यह नाल काटने का कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में चामइन किया करती है।

गर्भवती स्त्री के लिए 'गोड़ भारी होना' और प्रसव के समय दर्द होने को 'बेदन/बेधन' कहा जाता है। पुत्र जन्म के समय सोहर गीत गाया जाता है।

झाड़-फूंक/ओझौती :

साँप का विष झारने का मंत्र :

गर बान्हो गरबन्धन बान्हो, सवा लाख बिखठाई बान्हो
हम छेड़ाई तब छूटे, गुरु छोड़ाईं तब छूटे।
दोसर छोड़ावे त उदर फार मरि जाय (सात बार कहकर बान्हते हैं)
रामलाल रामलाल कहाँ जात बाड़S? कुश काटे, ऊकुश का होई? हँसुआ बनावे के।
ऊहँसुआ का होई? हब्बा-डब्बा झारे के।
दोहाई ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की, नन्ना-जोगिनी की सीख।

अधकपारी :

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

ए पार गंगा ओ पार जमुना
बीच में श्रीराम चन्द्र जी धनुष चढ़ावे, सीता झारे केस।
दोहाई ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की, इनकर कपार ठीक हो जाय।

सिरदर्द झारने का मंत्र :

हे शिव, तू काशी जइबऽ, काशी जइबऽ नरक में परबऽ।
फिर के अइबऽ, मारल जइबऽ।
जस के बीरा हमरा के दऽ, पान के बीरा तू उठावऽ।
सुनी गउरा पारवती के दोहाई,
सत गुरु के बन्दोपार 'छू' (पाँच बार)।

हड्डी बिरनी झारने का मंत्र :

सीस करम, बीख हरन, देश कौरु बखानिए।
मुआ बालक दे असीस,
हड्डा बिरनी, बिछी और गिनगिनी,
उदनास के दोहाई, सब बीख माटी मिल जाई।
सत गउरा पारबती के दोहाई, सत्गुरु के बन्दोपार छूः (पाँच बार)
बिरनी रानी तू बौरानी, तोरे मरले आग न पानी। छूः (पाँच बार)

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.